केंद्रं यानी चार घर 1,4,7,10

कुंडली का वह स्थान है,जहाँ किसी भी ग्रह का बैठना लगन घर की शक्ति प्राप्त कर कुछ खास तौर का ग्रहो के प्रति फल अर्जित कर.जाता है जैसे जब बुध केंद्र में हो तो मनुष्य शिक्षक होता है !लेकिन सुर्य केंद्रं मे हो तो सरकार की सेवा,ओर धन अर्जित मनुष्य राजा की सेवा करने.हो,चंद्र केंद्रं में हो.तो लीकवड धन अटुट साथ पुरा जीवन बना रहता है।मंगल केंद्रं में किसी लगजरी ऊँच वाहन को चलाने का शौकीन ओर अस्त्र शस्त्र के व्यापार.में बढ़ोतरी से उत्तम जीवन यापन कर शुरवीर बनाता है,ओर बड़ी औकड़े भी घबराने नही देती।वृहस्पति होने से खुद के ज्ञान ओर घर के बड़ो की आर्शीवाद का असर जल्द हो प्राप्टी में अन्य.साधनो से आकस्मिक धन प्राप्ति से विकास होता.है।शुक्र होने से.दिनचर्या में खुशीमौज मस्ती,ओर धन के खर्च से भी धन की प्राप्ति भी साथ.साथ.होती.रहती है।शनि होने से बने बनाये मकान ओर अधीन कर्मचारियो की मेहनत.के बलबुते से धनवान् बनने का योग बनता है।राहु से प्रोफेशनल ज्ञान ओर लगन से की गयी अनथक मेहनत के परिणाम निकट भविष्य मे बढ़ कर मिलते है ओर केतु.से नये प्रशिक्षण ओर प्रोफेशन के गुप्त ओर राज के अदुभुत.गुर मिलते है जिसका अर्जित धन बड़ी मात्रा में.मिलता रहता.है ओर आकस्मिक लाभ भी मिलते.है।

जयोतिष के और भी सूत्रों पर धयान अवश्य दें जैसे अवस्था उदय अस्त, नीच आदि, ॥